विद्यापति

जन्म	:	1350 ई० ।
मृत्यु	:	1448 ई० (कार्तिक धवल त्रयोदशी)।
जन्म-स्थान	:	बिसफी, मधुबनी ।
कृति	:	**संस्कृत–** 'पुरुष परीक्षा', 'भूपरिक्रमा', 'विभागसार', 'लिखनावली', 'दुर्गाभक्ति तरंगिणी', 'गंगावाक्यावली', 'दानवाक्यावली', 'वर्षकृत्य', 'गयापत्तलक' आदि । **अवहट्ठ–** 'कीर्तिलता' ओ 'कीर्तिपताका' । **संस्कृत– मैथिली मिश्रित**(नाटक)– 'गोरक्षविजय' ओ 'मणिमंजरी' । **मैथिली–** 'पदावली' ।

युगस्रष्टा आ युगद्रष्टा कवि कोकिल विद्यापति एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कवि छलाह । ई बहुभाषाविद् सेहो छलाह । संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ठ ओ मैथिली पर हिनक समान अधिकार छलनि । संस्कृतमे ई ज्योतिष, इतिहास, भूगोल, व्याकरण आदि विविध विषयक पाण्डित्यपूर्ण रचना कयलनि मुदा जाहि कृतिक बल पर भारतीय साहित्यमे अविस्मरणीय भऽ गेलाह ओ थिक हिनक कोमलकान्त 'पदावली' । साहित्यिक प्रयाणक आरंभिक चरणमे मैथिलीकेँ लोकप्रिय बनयबाक श्रेय हिनका देल जा सकैत अछि ।

'पदावली' सहस्रो मुक्तक गीतक एक संग्रह थिक जाहिमे मुख्यत: शृंगार ओ भक्ति विषयक गीत अछि । हिनक शृंगारिक गीतक अवलम्ब राधा-कृष्ण छथि । किछु पदमे गोपी लोकनिक संग, विशेषत: राधाक संग श्रीकृष्णक प्रणयलीला एवं किछु ओहन शृंगारिक पद जाहिमे नर-नारीक सहज प्रेम आ विलासक विविध भाव आ अवस्थाक चित्रण अछि । वस्तुत: ई प्रेम आ सौन्दर्यक कवि छथि । जखन कि भक्तिक दृष्टिकोणे शिवक प्रति बेसी अनुरक्त रहितहुँ प्राय: सभ देवी-देवताक प्रति अपन भक्ति निवेदित कयने छथि ।

काव्य-संदर्भ : एहि पोथीमे हुनक दू गोट गीत संकलित भेल अछि जाहिमे प्रथम वय: सन्धिक ओ दोसर भक्तिमूलक थिक । प्रथम गीतमे मुग्धा नायिकाक शैशवावस्था ओ यौवनावस्थाक समागमक फलस्वरूप हुनक अंग-प्रत्यंग एवं हाव-भावमे नैसर्गिक ओ मनोवैज्ञानिक दृष्टिएँ परिवर्त्तन परिलक्षित होइत अछि । नायिकाक मानसिक आरोह-अवरोहक बड़ यथार्थ चित्रण एहिमे भेल अछि ।

दोसर भक्तिपरक रचना अछि जाहिमे शिव एवं विष्णुकेँ अभिन्न मानल गेल अछि । एतय कवि एकेश्वरवादक समर्थन कऽ समन्वयवादी दृष्टिकोण एवं साम्प्रदायिक उदारताक परिचय देलनि अछि ।

वय:सन्धि

सैसव जौवन दुहु मिलि गेल ।
स्रवनक पथ दुहु लोचन लेल ॥
वचनक चातुरि लहु-लहु हास ।
धरनिए चान्द कएल परगास ॥
मुकुर हाथ लए करए सिङ्गार ।
सखि पूछए कैसे सुरत-विहार ॥
निरूजने उरज हेरइ कत बेरि ।
बिहुसए अपन पयोधर हेरि ॥
पहिल बदरि सम पुन नवरङ्ग ।
दिने-दिने अनङ्ग अगोरल अङ्ग ॥
माधव, पेखल अपरूब बाला ।
सैसव यौवन दुहु एक भेला ॥
विद्यापति कह तुहु अगेआनि ।
दुहु एक जोग इह के कह सयानि ॥

●

शब्दार्थ – सैसव = वाल्यावस्था; लहु-लहु = मन्द-मन्द; धरनिए = धरतीपर; परगास = प्रकाश, मुकुर = अयना; सुरत-विहार = काम-क्रीड़ा; निरजन = एकान्त, उरज = स्तन, हेरइ = देखैत छथि; पयोधर = स्तन; बदरि = बैरक फल; नवरङ्ग = नारंगी, अनङ्ग = कामदेव; माधव = कृष्ण, अपरुब = अपूर्व, बाला = सुन्दरि अगेआनि = अज्ञानी; सयानि = चतुर ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. एहि कवितामे नायिकाक कोन अवस्थाक वर्णन कयल गेल अछि ?
2. एहि अवस्थामे कोन-कोन मनोवैज्ञानिक परिवर्तन परिलक्षित होइत अछि, तकर उल्लेख करू।
3. 'स्रवणक पथ दुहु लोचन लेल' केर अर्थ स्पष्ट करू।
4. एहिमे कोन नायिकाक वर्णन कयल गेल अछि।
5. पठित कविताक सारांश लिखू।

गतिविधि :

1. विद्यापतिक कोनो दोसर श्रृंगारिक रचनाकेँ सस्वर गाऊ, लिखू एवं कंठस्थ करू।
2. विद्यापतिक परवर्ती कोनो दोसर कविक श्रृंगारिक रचना लिखू।
3. निम्नलिखित शब्दक अर्थ शब्दकोषसँ ताकिकेँ लिखू– स्रवन, लोचन, विहुसए, जोग।
4. एहि कवितासँ विशेषण शब्दकेँ ताकिकेँ लिखू।
5. संज्ञाक परिभाषा लिखि दस संज्ञा शब्दसँ विशेषण बनाऊ।

निर्देश :

(क) शिक्षकसँ अपेक्षा कयल जाइत अछि जे वयः सन्धिक वृहत चर्चा कऽ छात्रकेँ बोध करावथि जे एहि अवस्थामे आङ्गिक परिवर्तनक मनोवैज्ञानिक असरि की पड़ैत छैक ?

(ख) शिक्षक विद्यापति पदावलीमे सँ वयः सन्धिक एक आओर पद ताकिकेँ विद्यार्थीकेँ लिखाय देथि।

(ग) काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोणे रसक सामान्य व्याख्या करैत श्रृंगार ओ भक्ति पर केन्द्रित ज्ञानसँ छात्रकेँ अवगत कराओलं जयबाक प्रयोजक अछि।

□

हर-हरि

भल हर भल हरि भल तुअ कला।
खन पीत बसन खनहि बघछला॥
खन पञ्चानन खन भुज चारि।
खन सङ्कर खन देव मुरारि॥
खन गोकुल भए चराइअ गाय।
खन भिखि माँगिए डमरु बजाय॥
खन गोविन्द भए लिअ महादान।
खनहि भसम भरु काँख ओ कान॥
एक शरीर लेल दुइ बास।
खन बैकुण्ठ खनहि कैलास॥
भनइ विद्यापति विपरित बानि।
ओ नारायन ओ सुलपानि॥

●

शब्दार्थ– हर = महादेव; हरि = विष्णु; खन = क्षणमे; पञ्चानन = शिव; पीतबसन = पिअर वस्त्र; मुरारि = कृष्ण; भसम = भस्म, छाउर; नारायण = विष्णु; सुलपानि = महादेव।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. विष्णुक वस्त्र कोन रंगक छनि ?
2. महादेव जखन पिअर वस्त्र पहिर लैत छथि तँ ओ कोन भगवान भऽ जाइत छथि ?
3. बाघक छाल कोन भगवान पहिरने रहै छथि ?
4. गोकुलमे गाय चरौनिहार भगवानक नाम लिखू ?
5. शिव की बजायकेँ भीख मंगैत छथि ?
6. बैकुण्ठमे के रहैत छथि ?
7. सुलपानि के छथि ?

8. नारायणसँ कोन भगवानक बोध होइत अछि ?

9. शिव एवं विष्णु एक छथि- साबित करू।

10. प्रस्तुत कवितामे देल-गेल भगवानक विभिन्न नामक उल्लेख करू।

गतिविधि :

1. शिव आ विष्णुक एकात्म रूपक वर्णन करू।
2. भगवानक रूप अनेक छनि, मुदा सभ भगवान एके छथि, तकर जिज्ञासा शिक्षकसँ करू।
3. विद्यापतिक कोनो आन भक्तिगीत अपन पुस्तकालयक पोथीसँ ताकि कऽ लिखू।
4. विद्यापतिक शिव सम्बन्धी कोनो नचारी लिखू। एहिमे शिक्षकक सहयोग लेल जा सकैछ।
5. विद्यापतिक 'पुरुष-परीक्षा' अपन पुस्तकालयमे ताकि ओकर मूल पाठ एवं अनुवादकेँ पढ़ू।
6. एहि कवितामे सँ पाँच टा विशेषण शब्द ताकिकेँ लिखू एवं वाक्यमे प्रयोग करू।
7. कवि द्वारा प्रतिपादित एकेश्वरवादसँ अहाँ कतेक दूर धरि सहमत छी ? विवेचना करू।

निर्देश :

(क) शिक्षकसँ अपेक्षा कयल जाइत अछि जे ओ विद्यापतिक अन्यान्य रचनासँ छात्रकेँ अवगत कराबथि।

(ख) शिक्षकसँ अपेक्षा जे ओ शिवक उगना रूपक कथा छात्र सभकेँ सुनाबथि।

(ग) शिक्षक विद्यापति पदावलीमे सँ शिव, राधा एवं कृष्ण सम्बन्धी दू चारि पदसँ छात्रकेँ अवगत कराबथि।

(घ) शिक्षक छात्रसँ भक्ति सम्बन्धी गीतक गायन वर्गमे कराबथि।

(ङ) यदि शिक्षककेँ कोनो छात्रक विद्यापति गीतक स्वर नीक लागनि तँ ओहि छात्रकेँ स्कूलक कोनो कार्यक्रममे भाग लेबा योग्य बनयबाक चेष्टा करथि।

(च) छात्रकेँ मिथिलाक आध्यात्मिक पृष्ठभूमिसँ अवगत कराओल जयबाक चाही। संगहि मौलिक रूपेँ शैव ओ शाक्त होइतहुँ मैथिलकेँ 'बहुदेवोपासक' किएक कहल जाइछ ? छात्रक ज्ञान विस्तार करू।